जातिगत भेदभाव

▶ डॉ. दविंदर कौर होरा साहित्यकार, इंदौर म.प्र

कितना भी तू कर ले सितम

आशा भोंसले. ...यह नाम केवल एक गायिका का नहीं, बल्कि संघर्ष, जिजीविषा और जीवन के प्रति अटूट विश्वास का प्रतीक है। जैसे उनके नाम में 'आशा' है, वैसे ही उनके जीवन के हर मोड़ पर उम्मीद की एक लौ जलती रही—कभी मंद, कभी प्रखर, पर कभी बुझी नहीं।

संघर्षों की कोख से जन्मी स्वर-सरिता

आठ सितंबर उन्नीस सौ तैंतीस को सांगली की धरती पर जन्मी आशा भोंसले एक ऐसे परिवार में पली-बढ़ीं जहाँ संगीत सांसों में बसा था। उनके पिता दीनानाथ मंगेशकर न केवल एक शास्त्रीय गायक थे, बल्कि एक सशक्त रंगकर्मी भी थे। किंतु नियति ने बचपन में ही आशा की परीक्षा लेनी शुरू कर दी–पिता का साया उनके सर से जल्दी ही उठ गया। घर की आर्थिक स्थिति डगमगा गई। वह उम्र जब बच्चों के हाथों में खिलौने होने चाहिए, उस उम्र में आशा के हाथों में ज़िम्मेदारियों का भार आ गया। अपनी बड़ी बहन लता मंगेशकर के साथ वो संघर्ष के रास्ते चल पड़ीं।

आशा जी के जीवन का पहला कठोरतम मोड़

कम उम्र में ही आशा जी प्रेम-विवाह कर लिया, पर यह निर्णय उनके जीवन की सबसे कठिन परीक्षाओं में बदल गया। वैवाहिक जीवन सुखद नहीं रहा। मानसिक और सामाजिक संघर्षों से गुजरते हुए उन्होंने यह सीखा कि टूट कर बिखरना विकल्प नहीं है। वह समय उनके जीवन का सबसे अंधकारमय दौर था, परंतु यही अंधकार उनके भीतर प्रकाश की खोज का कारण बना। आशा जी ने अपने नाम को सार्थक करते हुए हर परिस्थिति में आशा और उम्मीद भरे आंचल को थामे रखा।

संघर्ष से संगीत तक का सफर

आशा जी के लिए फिल्मी दुनिया में प्रवेश पाना आसान नहीं था। शुरुआती दौर में उन्हें छोटे-मोटे गीत, बी-ग्रेड फिल्मों के गाने और कभी-कभी केवल कोरस में गाने का अवसर ही मिल पाता था। उनकी आवाज़ को लंबे समय तक मुख्यधारा में स्थान नहीं मिला। जहाँ लता मंगेशकर की मधुर और पारंपरिक शैली का बोलबाला था, वहीं आशा की आवाज़ को अलग तरह के गीतों तक सीमित कर दिया गया था। लेकिन आशा जी हार मानने वालों में से नहीं थीं। उन्होंने हर छोटे अवसर को बड़े अवसर में बदलने का संकल्प ले लिया।

एक नई पहचान की शुरुआत

आशा जी के जीवन में एक सुन्दर मोड़ तब आया जब उन्होंने संगीतकार ओ. पी. नय्यर के साथ काम करना शुरू किया। यहीं वह दौर था जब उनकी आवाज़ ने एक अलग पहचान बनानी शुरू की।

गीत जैसे

* आइए मेहरबां
* यह है रेशमी जुल्फों का अंधेरा

इन गीतों ने आशा जी को केवल एक गायिका नहीं, बल्कि एक अलग शैली की प्रतिनिधि बना दिया। उनकी आवाज़ में एक चंचलता थी। एक नटखटपन, एक साहस–जो उस समय के संगीत में दुर्लभ था।

आर. डी. बर्मन के साथ स्वर्णिम युग

आशा जी के जीवन में एक और महत्वपूर्ण अध्याय जुड़ा–आर. डी. बर्मन के साथ उनका संगीत और जीवन का संबंध। यह केवल एक पेशेवर रिश्ता नहीं था, बल्कि दो रचनात्मक आत्माओं का संगम था। इसी दौर में उन्होंने ऐसे गीत दिए जो आज भी कालजयी हैं–

* पिया तू अब तो आजा
* दम मारो दम
* चुरा लिया है तुमने जो दिल को

इन गीतों में आशा की आवाज़ केवल सुर नहीं थी, वह भावनाओं की अभिव्यक्ति थी–कभी उन्मुक्त, कभी रहस्यमयी, तो कभी अत्यंत कोमल।

हर रंग में ढलने की क्षमता

आशा भोंसले की सबसे बड़ी विशेषता उनकी बहुमुखी प्रतिभा रही है। जहाँ एक ओर उन्होंने मस्ती और चंचलता से भरे गीत गाए, वहीं दूसरी ओर उन्होंने ग़ज़लों और शास्त्रीय शैली में भी अपनी गहरी छाप छोड़ी। उनकी गाई हुई ग़ज़लें, विशेषकर दिल चीज क्या है इस बात का प्रमाण हैं कि उनकी आवाज़ में केवल चंचलता ही नहीं, बल्कि गहराई और संवेदना भी उतनी ही प्रबल है।

संघर्ष की आग में तपकर बनी पहचान

आशा जी का जीवन हमें यह सिखाता है कि सफलता कभी भी सहज नहीं होती। उन्हें बार-बार तुलना का सामना करना पड़ा–विशेषकर अपनी ही बहन लता मंगेशकर जी के साथ उनकी तुलना की जाती रही , परंतु आशा जी ने तुलना को प्रतिस्पर्धा नहीं बनने दिया। उन्होंने अपनी अलग राह बनाई।एक ऐसी राह जहाँ उनकी अपनी पहचान थी, उनकी अपनी आवाज़ थी।

आशा–नाम नहीं, जीवन-दर्शन

आशा भोंसले का जीवन इस सत्य का प्रमाण है कि नाम केवल पहचान नहीं होता, वह एक दिशा भी हो सकता है।उन्होंने अपने जीवन के हर अंधेरे में एक दीपक जलाया ..आशा का दीपक। जब जीवन ने उन्हें ठुकराया, उन्होंने गीतों में शरण ली। जब समाज ने प्रश्न उठाए, उन्होंने अपने काम से उत्तर दिया। जब परिस्थितियाँ विपरीत हुईं, उन्होंने अपने भीतर की शक्ति को जगाया।

एक स्त्री के अहम और आत्मनिर्भरता की कहानी

आशा भोंसले का जीवन केवल एक कलाकार की कहानी नहीं, बल्कि एक स्त्री की आत्मनिर्भरता की भी कहानी है। उन्होंने यह सिद्ध किया कि एक स्त्री केवल परिस्थितियों की शिकार नहीं होती, वह उन्हें बदलने की क्षमता भी रखती है। उन्होंने अपने संघर्षों को अपनी शक्ति बनाया और अपने दर्द को अपनी आवाज़ में ढाल दिया।

विरासत और प्रेरणा

आज आशा भोंसले केवल एक नाम नहीं, अपनेपन में एक संस्था हैं। उनकी आवाज़ पीढ़ियों को जोड़ती है–पुरानी यादों से लेकर नए सपनों तक। उनके गीत केवल मनोरंजन नहीं करते, वे जीवन के रंगों को अभिव्यक्त करते हैं–प्रेम, पीड़ा, उल्लास, विरह, और सबसे बढ़कर–आशा। आशा भोंसले का जीवन एक संदेश है। चाहे जीवन में कितनी भी कठिनाइयाँ क्यों न आएँ, यदि मन में आशा हो, तो हर अंधेरा छंट सकता है। आशा भोंसले का जीवन संघर्ष हमें यह सिख देता है कि संघर्ष अंत नहीं होता, बल्कि एक नई शुरुआत का होता है। आशा जी सचमुच अपने नाम के अनुरूप ही रहीं आशा से भरी हुई, जीवन से परिपूर्ण, और संगीत से अमर।

निशब्द हो गया हर शख्स,आत्मा सिहर उठी, रोंगटे खडे हो गए जब सरकाघाट के गोपालपुर मे एक युवक ने एक युवती की नृशन्स हत्या को अंजाम दिया द्य यह बहुत ही दर्दनाक घटना है । घर से कालेज को निकली शिया ने सपने मे भी नहीं सोचा होगा की रास्ते मे घात लगाए बैठा दरिंदा उसकी जान ले लेगा लोगों व पुलिस की मदद से इस दरिंदे को पकड़ लिया है यह सरासर अराजकता है अराजक तत्व दरिंदे बन चुके है ।

यह घटना प्रलय की आहट है ऐसे दरिंदो का फन कुचलना होगा । ऐसी वारदातों से असुरक्षा का माहौल बन गया है द्य वीरान व सुनसान रास्तो पर बेटियां असुरक्षित हो गई हैं ।

गोपालपुर मे एक सिरफिरे द्वारा किया गया यह जघन्य अपराध अक्षम्य है। शांति वादियों व देवभूमि हिमाचल मे ऐसे अपराध बहुत ही अशुभ संकेत है । देवभूमि के लिए विख्यात हिमाचल देवभूमि बनता जा रहा है द्य यह कोई पहला हादसा नहीं है कुछ साल पहले पालमपुर मे भी एक सिरफिरे ने एक लड़की पर दराट से हमला करके बुरी तरह घायल कर दिया था । ऐसे लोगों को सलाखो के पीछे बंद करना चाहिए ताकि तिल तिल मर सके मौत की सजा देनी चाहिए । दरिंदे ने देवभूमि को कलंकित किया है द्य विश्व मे हिमाचल की फजीहत करवाई है ऐसे वहसी व कुख्यात लोगों को फांसी पर लटकाना चाहिए ताकि भविष्य मे फिर ऐसा हादसा घटित न हो सके द्य ऐसे असमाजिक तत्वों पर लगाम लगानी होगी ऐसे लोगों को बहिस्कार करना होगा सो समाज मे खून की होली खेल रहे हैं । कातिल दरिंदा काल बन गया और एक बेटी का कलेआम कर दिया हिमाचल मे ऐसे हादसे बहुत की घातक हैं । प्रदेश मे ऐसे हादसों की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी लेकिन पिछले काफ़ी समय से ऐसे हादसों मे इजाफा होता जा रहा है समाज को इस घटना पर मंथन करना होगा द्य ऐसे खतरनाक लोगों की पहचान करनी होंगी ऐसे लोगों का नेस्तनाबूद करना होगा ताकि एक स्वस्थ समाज बन सके यह समाज हित मे है । प्रसासन को ऐसे लोगों पर शिकंजा कसना चाहिए । चौकसी रखनी होगी। सतर्कता बरतनी होगी यह प्रदेश हित मे है । ऐसे हैवानियत करने वाले हेवानो को सजा ए मौत देनी चाहिए ताकि ऐसे हादसों की पुनरावृति न हो सके।

नरेंद्र भारती
वरिष्ठ पत्रकार

वीज़ा और एचडीएफसी बैंक भारतीय फ़ैन्स को

फीफा वर्ल्ड कप 2026 के ला रहे हैं और करीब

मुंबई, : वीज़ा (एनवाईएसई :वी), जो डिजिटल पेमेंट्स में दुनिया की जानी-मानी कंपनी है और फीफा की ऑफ़िशियल पार्टनर भी है, ने आज भारत के सबसे बड़े प्राइवेट बैंक, एचडीएफसी बैंक के साथ 'फीफा वर्ल्ड कप 2026' के लिए अपनी पार्टनरशिप का ऐलान किया। इस पार्टनरशिप के तहत वीज़ा और एचडीएफसी बैंक ने 'फीफा वर्ल्ड कप 2026' का एक लिमिटेड-एडिशन 'वीज़ा पिक्सल क्रेडिट कार्ड' लॉन्च किया है।

इसके साथ ही, पूरे देश में एक खास 'स्पेंड एंड विन' कैंपेन भी शुरू किया गया है, जिससे भारतीय कस्टमर्स दुनिया के सबसे ज़्यादा इंतज़ार किए जाने वाले ग्लोबल स्पोर्ट्स इवेंट के और करीब आ सकेंगे।

मुंबई में एक शानदार लॉन्च इवेंट में इस ऐलान का जश्न मनाया गया। इस इवेंट में दुनिया भर में मशहूर फ़ुटबॉल स्टार माइकल ओवेन भी मौजूद थे, जिन्होंने 'फीफा वर्ल्ड कप 2026' के रोमांच, बड़े पैमाने और ग्लोबल रुतबे को और भी खास बना दिया।

'फीफा वर्ल्ड कप 2026' का यह इकलौता लिमिटेड-एडिशन वीज़ा - पिक्सल क्रेडिट कार्ड, जो एचडीएफसी बैंक का डिजिटल-फ़र्स्ट और ऐप-बेस्ड क्रेडिट कार्ड है, आज के डिजिटल ज़माने के कस्टमर्स के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह कार्ड तुरंत जारी हो जाता है, इसमें अपनी पसंद के हिसाब से बदलाव किए जा सकते हैं और डिजिटल पेमेंट्स भी बिना किसी रुकावट के हो जाते हैं। फीफा की थीम वाला यह कार्ड 11 अप्रैल से एचडीएफसी बैंक के मौजूदा पिक्सल प्ले कस्टमर्स के साथ-साथ पिक्सल प्ले के नए आवेदकों के लिए भी उपलब्ध होगा।

एचडीएफसी बैंक के पेमेंट पोर्टफोलियो में फीफा की साझेदारी –यह ऐतिहासिक साझेदारी अब एचडीएफसी बैंक के ग्राहकों को, उनके सभी कार्ड पोर्टफोलियो, जिनमें क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड और बिज़नेस कार्ड शामिल हैं, के ज़रिए 'फीफा वर्ल्ड कप 2026' का मैच लाइव देखने का मौका देती है। फीफा के साथ वीज़ा की लंबे समय से चली आ रही वैश्विक साझेदारी और वीज़ा के सुरक्षित, हर जगह स्वीकार किए जाने वाले पेमेंट नेटवर्क द्वारा समर्थित, यह पहल रोज़मर्रा के पेमेंट्स को फ़ुटबॉल के यादगार अनुभवों में बदल देती है।

'खर्च करें और जीतें' (स्पेंड एंड विन) कैंपेन फीफा के ऐसे इनाम जो जीवन में एक बार ही मिलते हैं -इस साझेदारी का मुख्य आकर्षण एक खास 'खर्च करें और जीतें' (स्पेंड एंड विन) कैंपेन है। यह कैंपेन एचडीएफसी बैंक के कार्ड पोर्टफोलियो,जिसमें क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड, बिज़नेस कार्ड और फ़ॉरेक्स प्रीपेड कार्ड शामिल हैं, के लिए चलाया जा रहा है। इस कैंपेन के तहत, तय शर्तों के अनुसार खर्च करने पर ग्राहकों को कई शानदार इनाम जीतने का मौका मिलता है; इन इनामों में 'फीफा वर्ल्ड कप 2026' के मैच पैकेज, फीफा-थीम वाले स्टेकेशन, फीफा का आधिकारिक मर्चेंडाइज़, और शॉपिंग व लाइफस्टाइल वाउचर शामिल हैं। यह कैंपेन फ़ुटबॉल प्रशंसकों को सिर्फ़ मैच के दिनों तक ही सीमित न रखते हुए, टूर्नामेंट के साथ और भी गहरे स्तर पर जुड़ने का अवसर देता है, जिसके ज़रिए फ़ुटबॉल के प्रति उनके जुनून को रोज़मर्रा के खर्चों और डिजिटल पेमेंट्स के साथ जोड़ा जाता है।

एचडीएफसी बैंक के ग्रुप हेड, ब्रांच बैंकिंग, पेमेंट्स, ट्रेज़री, लायबिलिटी प्रोडक्ट्स, मार्केटिंग, वर्चुअल चैनल्स और इंफ्रास्ट्रक्चर-आशीष पार्थसारथी ने कहा, 'भारत के सबसे बड़े क्रेडिट कार्ड जारीकर्ता के तौर पर, हमें वीज़ा के साथ साझेदारी करके लाखों ग्राहकों के लिए फीफा वर्ल्ड कप का रोमांच और डिजिटल पेमेंट्स की आसान सुविधा एक साथ लाने में खुशी हो रही है। इस सहयोग के ज़रिए, हम खास सुविधाओं और अपने खास तौर पर बनाए गए लिमिटेड-एडिशन एचडीएफसी बैंक पिक्सल प्ले क्रेडिट कार्ड के साथ प्रशंसकों के अनुभव को और बेहतर बना रहे हैं। हम अपने कार्डधारकों को टूर्नामेंट से जुड़ने, फ़ुटबॉल के प्रति अपने जुनून का जश्न मनाने और 'फीफा वर्ल्ड कप- 2026' के दौरान बेहतरीन फ़ायदों का आनंद लेने के बेजोड़ अवसर देने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

खुल गया, खुल गया, खुल गया...

आज की दुनिया के आन-बान-शान (माल) वाले अभिभावकों! आपके अपने शहर में खुलने जा रहा है एक वर्ल्ड क्लास स्कूल। अब स्कूल वर्ल्ड क्लास होगा तो बाजार से कोई चीज खरीदने की छूट या जरूरत भी किसी को क्यों होगी? भुगतान आपका, सारी सुविधाएं हमारी। फिर चाहे वो केश के बदले हो या ऑनलाइन। पेमेंट ब्लेक हो या व्हाइट सब स्वीकार। भर्ती के लिए न कोई मानदंड न आधार।

उपलब्ध सुविधाएं-

* कॉपी-किताब, डायरी से लेकर साल भर की सारी स्टेशनरी हमारी।
* सर्दी-गर्मी-बरसात की ड्रेस से लेकर टोपी, छतरी हमारी।
* टाई-बेल्ट-बेज-बस्ता, जूते-मौजे भी हमारे।
* लंच-बॉक्स सहित ब्रेकफास्ट और लंच हमारा।
* पानी की बोतल के साथ मिनरल वाटर भी हमारा।
* कमरों से मैदान तक धूप-छाँव-हवा और रोशनी हमारी।
* खेल-मैदान से लेकर खेल-सामग्री, बैंडेज, सेफ्टी गार्ड्स और फर्स्ट-एड तक हमारी।
* पढ़ाई-लिखाई और मंथली टेस्ट से लेकर टर्मिनल, हाफ-इयरली और एन्युअल एग्जाम से लेकर रिजल्ट्स तक हमारे।
* नियम-कायदे, अनुबंध और शर्तें हमारी।
* इन सबके साथ ही- जेब, बजट और बच्चा पूरी तरह आपका।
* 'निःसंतान दंपतियों' के लिए 'प्रवेश योग्य बच्चे' भी उपलब्ध।
* प्रवेश जारी, स्थान असीमित। अनुभवी शिक्षकों की भरमार, साथ ही योग्य शिक्षकों की है दरकार।।
* न्यूनतम योग्यता- एचएसपी (हाई स्कूल पास),10+2 वाले को प्राथमिकता। वेतन-भत्ते योग्यता, सेवा-भावना, शक़्ल-सूरत और कार्य अनुसार।
* तनिक भी न करें विचार, क्योंकि हम कर रहे हैं आपका पलक-पाँवड़े बिछा कर खुली आँखों से इंतज़ार।

प्रणय प्रभात, श्योपुर (मध्यप्रदेश)
8959493240

अकेलापन, जीवन और जीवन का अंतिम पड़ाव

यह एक बहुत ही दर्दनाक और वास्तविकता भरा सच हैकि एक इंसान पूरी जिंदगी मेहनत करता है, अपने परिवार और बच्चों के लिए त्याग करता है, लेकिन आखिर में जब वह अपनी जिंदगी के अंतिम पड़ाव पर पहुंचता है, तो उसके अपने ही उसके कामों को नजरअंदाज कर देते हैं या उनकी कद्र नहीं करते।

इससे इंसान को न केवल दुख होता है, बल्कि वह टूट भी जाता है। उसके पास कुछ नहीं बचता, न तो मेहनत का फल और न ही अपने प्रियजनों का प्यार। यह एक कड़वी सच्चाई है जो बहुत से लोगों को अपनी जिंदगी में झेलनी पड़ती है। आज भी कई लोग इस समस्या से ग्रस्त हैं। ये एक गहरा दर्द और एहसास है जो बहुत से लोगों के दिलों की आवाज है। जो उसे खामोशी से बर्दाश्त करने को मजबूर हैं, क्या करें कहां जाए कोई रास्ता नहीं।

दर्द का विश्लेषण करने पर, यह समझ में आता है कि यह एक गहरा दर्द है,और जटिल भावना है जो कई कारकों से प्रभावित होती है।

अपेक्षीएशन,,,,जब एक इंसान की मेहनत और त्याग को उसके परिवार और बच्चों द्वारा पहचाना नहीं जाता है, तो इससे उसे लगता है कि उसकी मेहनत बेकार गई है।

अकेलापन,,,जब एक इंसान अपने जीवन के अंतिम पड़ाव पर पहुंचता है, तो उसे लगता है कि वह अकेला है और उसके पास कोई नहीं है जो उसकी भावनाओं को समझ सकेनिराशा,,,जब एक इंसान की उम्मीदें और सपने टूट जाते हैं, तो इससे उसे निराशा और हताशा का अनुभव होता है।इस दर्द को कम करने के लिए, यह जरूरी है कि हम अपने प्रियजनों के साथ खुलकर बात करें और अपनी भावनाओं को साझा करें। साथ ही, हमें अपने परिवार और बच्चों को भी समझाना होगा कि हमारी मेहनत और त्याग का महत्व क्या है।

ऐसे में कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाए जा सकते हैं

बातचीत,,,,अपने परिवार और बच्चों के साथ खुलकर बात करें और अपनी भावनाओं को साझा करें। इससे उन्हें आपकी भावनाओं को समझने में मदद मिलेगी। अपनी जरूरतों और अपेक्षाओं को स्पष्ट रूप से बताएं। इससे आपके परिवार और बच्चों को पता चलेगा कि आपको क्या चाहिए।अपने परिवार और बच्चों के साथ समय बिताएं और उनके साथ जुड़ने का प्रयास करें। इससे आपके रिश्तों में मजबूती आएगी।

अपनी शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखें। इससे आपको अपने जीवन को बेहतर ढंग से जीने में मदद मिलेगी। इन कदमों से आप अपने जीवन को बेहतर बना सकते हैं और अपने परिवार और बच्चों के साथ मजबूत रिश्ते बना सकते हैं।

डॉ. मुस्ताक अहमद शाह
हरदा मध्य प्रदेश.

नारी शक्ति वंदन सम्मेलन का

मातृशक्ति ने देखा आंखों देखा हाल

बालाघाट। विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित नारी शक्ति वंदन सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का प्रेरणादायी संबोधन कल भाजपा जिला कार्यालय में जिले की गणमान्य मातृशक्ति, जनप्रतिनिधि और पार्टी पदाधिकारियों ने एक साथ भव्य स्क्रीन में श्रवण कर आंखों देखा हाल देखा।

इस अवसर पर सांसद भारती पारधी, भाजपा जिलाध्यक्ष, पूर्व मंत्री रामकिशोर नानो कावरे, पूर्व जिलाध्यक्ष रमेश रंगलानी, सत्यनारायण अग्रवाल, राज्य पिछड़ा वर्ग कल्याण आयोग सदस्य मौसम बिसेन, राजकुमार रायजादा, महेन्द्र सुराना, महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष हेमा वाघवानी, मीना राहंगडाले, वंदना बारमाटे, श्वेता जैन, गरिमा गौतम, दिपिका बिसेन, पूनम गोरले, मीनाक्षी हरिनखेरे, रखा हरिनखेरे, रितु मोहरे, सरिता सोनेकर, जिला महामंत्री संजय मिश्रा, जिला उपाध्यक्ष अनिल धुवारे, गोपाल आडवाणी, जितेन्द्र सिंह मोहरे, जिला मंत्री सुधीर चौधरी, कन्हैया चौहान, जिला मीडिया प्रभारी हेमेंद्र क्षीरसागर, जिला मीडिया सह प्रभारी जितेंद्र चौधरी, जिला कार्यालय मंत्री सुमित यादव, अजय मिश्रा, राजेश पाटक, राकेश सेवईवार, विशाल मंगलानी, राजेश लिल्हारे, जैनेन्द्र कटरे, सिद्धांत पाटिल, अमन गांधी, भुवन राहंगडाले, संतोष सिंगारे, खिमेन्द्र गौतम, सिद्धार्थ वाजपेई उपस्थित रहे। आशय की जानकारी भाजपा जिला मीडिया प्रभारी हेमेंद्र क्षीरसागर ने दी।

नारी शक्ति राष्ट्र निर्माण की धुरी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने उद्बोधन में नारी शक्ति को राष्ट्र निर्माण की सशक्त धुरी बताते हुए उनके सम्मान, सुरक्षा, सहभागिता और सशक्तिकरण के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को स्पष्ट रूप से रेखांकित किया। इसी कड़ी में देश की भावनाओं और मातृशक्ति को सम्मान स्वरूप नारी शक्ति वंदन अधिनियम के तहत नारी शक्ति की सहभागिता, समृद्ध भारत की सफलता साबित होगी।

आत्मनिर्भर भारत को नई ऊर्जा : भारती पारधी

इस अवसर पर सांसद भारती पारधी ने कहा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की दूरदर्शी सोच और संवेदनशील नेतृत्व ने केवल महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा देता है, बल्कि 'आत्मनिर्भर भारत' के संकल्प को भी नई ऊर्जा, दिशा और गति प्रदान करता है। अभिप्रेत नारी शक्ति वंदन अधिनियम एक ऐतिहासिक कदम होगा, जिसका देश की आबादी को बेसब्री इंतजार था, जो अब जाकर पूरा होगा।

परिवार से लेकर संसद तक मातृशक्ति का सशक्त नेतृत्व : रामकिशोर कांवरे

संसद और विधानसभा में 33 प्रतिशत महिला आरक्षण का संकल्प अब हकीकत बनने जा रहा है। मोदी जी के नेतृत्व में नारी शक्ति अब देश के विकास की मुख्यधारा का नेतृत्व करेगी। यह कहते हुए भाजपा जिलाध्यक्ष रामकिशोर कांवरे ने कहा, इस दृढ़निश्चय क़दम की जितनी भी तारीफ़ की जाएं उतनी ही कम होगी। लिहाजा अब परिवार से लेकर संसद तक मातृशक्ति का सशक्त नेतृत्व होगा।